Research Paper Hindi Literature

Bhartiya Stari Sahityakaro ke Upnyaso me Mahila Kathan Lekhan

भारतीय स्त्री साहित्यकारों के उपन्यासों में महिला कथा लेखन

Renu Aanand

Research Student, Nehru Gram Bharti Vishva Vidhyalaya, Illahabad.

ABSTRACT

महिला कथा लेखन यद्यपि बहुत पुरानी परंपरा तो नहीं है परंतु पिछले एक शताब्दी से इस क्षेत्र में विभिन्न उपन्यासकारों द्वारा अथक प्रयास किया गया है। बंग महिला राजेन्द्रबाला घोष की कहानी 'दुलाई वाली' का प्रकाशन सरस्वती पत्रिका में सन् 1907 ई0 में हुआ था। इस कहानी से आधुनिक महिला कथा लेखन की परंपरा आरंभ हुई और निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होती चली गई। राजेन्द्रबाला घोष जन्म से भले ही बंग महिला थी , परंतु लेखन से एक सम्पूर्ण हिन्दी– महिला थीं। 20वीं सदी शुरू ही हुई थी कि उन्होंने साहित्य में स्त्री आधुनिकता की शुरूआत किया। सन् 1903 में स्त्री विमर्श की जोरदार शुरूआत करते हुए उन्होंन स्त्री जाति को "दुर्दान्त मानव रूपी कुटिल पशु के पशुत्व से मुक्त होने " का पुरजोर वकालत किया 1। राजेन्द्रबाला घोष ने उपन्यास न लिखकर सिर्फ कहानियॉ ही लिखी है किंतु उन्होंने उपन्यास लेखन हेतु पृष्ठभूमि का निर्माण अवश्य कर दिया था। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए महादेवी वर्मा ने 1942 ई0 में 'श्रृंखला की कड़ियॉ' लिखकर भारतीय नारी की समस्याओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियॉ' लिखकर भारतीय नारी की समस्यो का विवेचन करते हुए यह सिद्ध किया कि वह नारी के संतप्त और अशक्त जीवन के प्रति कितनी चिन्तित ईमानदार और दृढ़संकल्प थी।महादेवी वर्मा ने महिला साहित्यकारों के बारे में लिखा है कि "साहित्य यदि स्त्री के सहयोग से शून्य हो तो उसे आधी मानव–जाति के प्रतिनिधत्व से शून्य समझना चाहिए। पुरूष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है, परन्तु अधिक सत्य नहीं; परन्तु यथार्थ के अधिक समीप नहीं, पुरूष के लिए नारीत्व अनुमान है परन्तु नारी के लिए अनुभव। अतः अपने जवीन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी वैसा पुरूष बहुत साधना के उपरान्त भी शायद ही दे सके।

साहित्य के क्षेत्र में महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियॉ' लिखकर स्त्री अस्मिता–वादी साहित्य की शुरूआत की। नारी मुक्ति का आख्यान प्रस्तुत करते हुए महादेवी वर्मा लिखती है कि , "हमें न किसी पर जय चाहिए न किसी पर पराजय, न किसी पर प्रभुत्व चाहिए न किसी पर प्रभुता केवल अपना वह स्थान स्वत्व चाहिए जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नही है, परंतु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगी 3। महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में पूर्ण चन्द्र की तरह है जो महिला साहित्य की मशाल थामें दिखाई देती है। 1956 ई0 में पद्मभूषण, तथा 'यामा' में श्रेष्ठ काव्य रचना के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त किया था। इन्होंने कविता, रेखाचित्र, संस्मरण एवम् निबंध सहित साहित्य के हर क्षेत्र में अपनी छाप बहुत गहराई तक छोड़ी। इनकी कुछ प्रमुख रचनाएं जो इन्हे साहित्यकारों में सर्वश्रेष्ठ बनाती है जैसे – निरजा, रश्मि, सांध्यगीत, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र, वह चीनी भाई, पद्म के साथी, मेरा परिवार, गिल्लू , श्रृंखला की कड़ियॉ आदि प्रमुख है। महादेवी वर्मा प्रतिभाशाली कवियत्री व उदयी लेखिका होने के साथ–साथ कुशल चित्रकार व सृजनात्मक अनुवादक भी थी।

समकालीन महिला साहित्यकारों ने नारी के बाह्य चित्रण की अपेक्षा उसके आंतरिक मनोंदशाओं के चित्रण में अधिक रूचि दिखाई है। आधुनिकता के कारण पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन हुए है, और इस परिवर्तन के कारण स्त्री पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक मूल्यों के बीच संघर्ष करती दिखाई देती है। इस काल के उपन्यासों में दाम्पत्य संबंध के प्रति नया दृष्टिकोण, नारी की सामाजिक, मानासिक, परिस्थिति से प्राप्त परिवर्तन, अकेली नारी, पुरूषों के साथ स्पर्धा करती नारी, आर्थिक दृष्टिकोण से स्वालंबी नारी आदि के अनेक रूप परिलक्षित होते है। आज के सामाजिक, धार्मिक, मानसिक, पारिवारिक एवं शारीरिक धरातल पर नारी का जो शोषण हो रहा है, उससे मुक्ति पाने के लिए नारी जो संघर्ष कर रही है उसका यथार्थ रूप आधुनिक महिला उपन्यासकरों के उपन्यासों मे प्राप्त होता है।

समय के साथ स्त्री–लेखन अधिक प्रयोग–धर्मी और प्रौढ़ होता जा रहा है , जीवन को वह अपनी नई दृष्टि से परख रहा है। वैसे भी अपने स्वानुभूत इतिहास के आध ार पर महादेवी जी से लेकर कृष्णा सोबती तक बेहतर महिला–लेखन लगातार कुछ न कुछ नया कर रहा है। मनुष्य और पशु–जगत, स्त्री और प्रकृति, मॉ और बेटी के रिश्तों के सन्दर्भ में बहुत सारे अनुभव, भाषा के कई प्रयोग, समय–समय पर इन लेखिकाओं ने प्रचलित सन्दर्भो से सम्बंध तोड़ कर एकदम नये रूप में सन्दर्भो को चिन्हित किया है और परखे हैं। डॉ0 उषा यादव जी कहती है ''घर–परिवार के सारे दायित्वों को समेटते हुए और कभी–कभी तो घर–बाहर के दोहरे उत्तरदायित्व को वहन करते हुए भी अपने भीतर घुमड़ती 'चीख' को शब्दबद्ध करने की विवशता का नाम ही महिला लेखन है। समाज में चतुर्दिक व्याप्त विषमताएँ और विसंगतियॉ जब चाहे–अनचाहे किसी महिला के संवेदनशील कलाकार मन तक पहुँचकर उसे आंदोलित करती है, तो वह उन्हें वाणी एवं शब्द देने की बाध्य हो जाती है।''4 स्पष्ट है कि संवेदनशीलता ही सच्चे कलाकार की पहचान है।

जिन आधुनिक महिला लेखिकाओ ने बदलते संदर्भ में स्त्री की बदलती मानसिकता तथा स्त्री की समस्याओं को केंद्र में रखकर अपने कथा संसार का सृजन किया और अपनी रचनाओं के द्वारा स्त्री पात्रों को सशक्त करने का प्रयास किया उनमें प्रमुख रूप से मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, अमृता प्रीतम, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पाण्डे, शिवानी, सूर्यबाला, मालती जोशी, कृष्णा अग्निहोत्री, सुनीता जैन, नासिरा शर्मा, राजी सेठ, जैसी एक लंबी सूची है।इन लेखिकाओ ने अपनी रचनाओं द्वारा स्त्री पात्र, स्त्री साहित्य तथा स्त्री लेखन को एक नई दशा और दिशा देने का प्रयास किया है।

KEYWORDS

आधुनिक स्त्री साहित्य में कुछ प्रमुख स्त्री पात्र चित्रण एवं विवेचनः–

प्रभा खेतान "छिन्नमस्ता"

प्रभा खेतान के उपन्यास छिन्नमस्ता की 'प्रिया' नारी समानता का सर्मथन करती है। प्रिया आधुनिक नौकरीपेशा नारी की त्रासदी और उसके संकल्प का एक प्रमाणि क दस्तावेज है। पुरूष की आदिम भूख और समाज की जर्जर मान्यताओं ने प्रिया का शोषण किया है। इस उपन्यास में प्रिया के विद्रोह के कई कारण है जिनमें कुछ सामाजिक कुछ आर्थिक और कुछ पुरूष मनोविकृति दर्शाता है। जैसे बचपन में प्रिया के साथ में होने वाला लिंग भेद अन्याय सामाजिक कारण है वही बड़े भाई एवं प्रोफेसर द्वारा उसका यौन एवं शारीरिक शोषण पुरूष मनोविकृति दर्शाता है और आर्थिक रूप से पति द्वारा प्रिया को कोई समर्थन न मिलना आर्थिक असमानता दर्शाता है। प्रिया अपनी प्रतिभा और संकल्प शक्ति से ऐसे मुकाम पर पहुँच जाती है, जहा से उसे रोकना संभव नहीं है। प्रिया ने नारी की कमजोर स्थिति जानकर अपने जिजिविषा को दबाया नहीं और विपरीत परिस्थितियों के साथ होते हुए भी अपने आप को एक सफल व्यापारी के रूप में स्थापित किया। प्रिया पति के समान व्यापार करना चाहती है। पति को यह पसन्द नहीं, प्रिया से हिसाब मॉगना, रिर्जव बैंक को पत्र लिखकर बिजनेस बन्द करने की धमकी आदि के कारण उसे पति का घर छोड़ना पडा। ''दरअसल तुम्हें इतनी खुली छूट देने की गलती मेरी ही थी। मुझे पहले ही चिड़िया के पंख काट डालने चाहिए थे।''5 उसके पति नरेन्द्र का यह कथन पुरूष की संकीर्ण मानसिकता का ही परिचय देता है। प्रिया इस पीड़ा, मानसिक यंत्रणा, निरीहता से उभर कर हमारे सम्मुख एक सबल नारी के रूप में उपस्थित होती है। उसका मानना है कि नारी सदैव ऐसी ही निरीह नहीं रहेंगी। समान अधिकार के बारे में प्रिया की सोच है–"स्त्री पुरूष का संबन्ध मालिक और गुलाम का, भोक्ता और भोज्या का, व्यक्ति और वस्तु का कब तक यह द्वन्द्व चलेगा?6

प्रभा खेतान ने अपनी नायिका के दृष्टिकोण को आधुनिक बनाते हुए समस्त भारतीय नारियों का अभिनंदन करती प्रतीत होती है।प्रभा खेतान का उपन्यास "छिन्नमस्ता" स्त्री के उचित–अनुचित परिस्थितियों में भी अपनी पहचान एंवम् जिजीविषा को कायम रखते हुए सामाजिक रूप से खुद को स्थापित करने और संकीर्णवादी मानसिकता को अपने ऊपर हावी न होने देने की प्रेरणा देता है।

कृष्णा सोबती 'मित्रों मरजानी'

कृष्णा सोबती ने अपने साहित्य में स्त्री की वास्तविक स्थिति उसके संघर्ष और स्त्रीमन की पीड़ा को बड़ी बारीकी और साहस के साथ उठाया है। कृष्णा सोबती हिंदी की एक ऐसी सशक्त नारीवादी लेखिका है, जिन्होंने अपने लेखन में स्त्री की बदलती हुई स्थिति, उसकी यातानाओं, संघर्षो को स्त्रीत्ववादी परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत किया है। कृष्णा जी के विषय में अपना विचार प्रकट करते हुए डॉ0 उषा यादव कहती है, ''लोक जीवन एवं उसके सांस्कृतिक परिवेश की अतल गहराइयों तक उतरने वाली सूक्ष्म कलादृष्टि उनके पास है। नारी के अंतरंग को पहचानने की कला में वे निपुण है।''7 'मित्रों मरजानी' कृष्णा सोबती का एक ऐसा उपन्यास है जिसमें

प्रेम चित्रण को एक नया रूप नया कलेवर देने का प्रयास किया गया है। उपन्यास की नायिका सुमित्रावन्ती एक निर्भीक, दबंग और बोल्ड नारी पात्र है, जो अपनी आवश्कताओं को लेकर घुटती नहीं रहती बल्कि निर्भय होकर सबके सामने रखती है। मित्रों एक ऐसी स्त्री है जो अपनी देहगत समस्याओं पर विचार करती है, अपनी यौनच्छाओं को प्रकट करती है। मित्रों के विषय में राजेन्द्र यादव जी कहते है, ''मित्रों हिन्दी–साहित्य की एकमात्र नारी है तो अपनी जरूरत को अपनी जबान में कहती है, अपनी भाषा में अपने होने की घोषणा करती है।''8

मित्रों अपनी वासना की तृप्ति के लिए अपने परिवार से, अपने समाज से, समय से यहॉ तक कि अपने आप से भी संघर्ष करती है, किंतु इन सब के बावजूद अपनी नैतिकता को नहीं खोती। मित्रों अपनी आकांक्षओं की अभिव्यक्ति को ढ़कने तोपने की जगह उसे सबके सामने अभिव्यक्त कर अपने साहस का परिचय देती है। अपनी तेजी दंबग पन के बावजूद मित्रों अंदर से मुलायम और ममतामयी औरत है जो शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कई पुरूषों से संबध रखती है किंतु कुछ समय बाद संतान की लालसा उसके लिए निराशा में परिवर्तित हो जाती है, और वह अपने पति सरदारी लाल के पास वापस लौट आती है। परिवार में जब मित्रों के मातृत्व पर प्रश्नचिहन लगाया जाता है तब वह खुले शब्दों में अपने पति की कमजोरी उसकी नपुसंकता की ओर संकेत करती है कि–''मेरा बस चले तो गिनकर सौ कौरव जन डालूँ, पर, अम्मा, अपने लाडले बेटे का भी तो आड़तोड़ जुटाओं। निगोड़े मेरे पत्थर के बुत में भी कोई हरकत तो हो''9 इस तरह स्त्री पहली बार अपने अनुभवों के साथ खुलकर बाहर आती है। वह पुरूष की नपुंसकता की ओर संकेत करती है।

मित्रों के विषय में राजेन्द्र जी कहते है, ''मुझे मित्रों हिंदी की अकेली ऐसी नारी–कथा लगती है जो सदियों से नारी पर लादे गए संस्कारों–सम्बन्धों, सुंदर–सुंदर उपमाओं को ललकारती मुँह चिढ़ाती और उन्हें झुठलाती हुई अपनी मूलभूत जरूरत और जबान के साथ हमारे सामने आ खड़ी हुई हो, छिन्नमस्ता काली की तरह और मानो हम उसके तेज को बर्दाश्त नहीं कर पाते।''10 विद्रोह और विरोध से सीचा हुआ कृष्णा सोबती का यह उपन्यास क्षण–प्रतिक्षण संघर्ष करती नारी की कहानी है जो समाज से, समय से ,परिवार से ,यहॉ तक कि अपने आप से भी संघर्ष करती है लेकिन सामाजिक मान्यताओं को तार–तार कर अपनी नैतिकता को बनाए रखती है।

ममता कलिया 'बेघर'

ममता कलिया का उपन्यास 'बेघर' बहुत ही चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास में ममता जी ने समाज में व्याप्त संकीर्ण मानकिसता और दकियानूसी के कारण जो घातक परिणाम हमारे सामने आता है उसी का वर्णन किया है। इस उपन्यास का नायक परमजीत भी एक ऐसी ही मान्यता का शिकार है। गलतफहमियों के शिकार होकर किशारे–किशोरियॉ अपनी सफल गृहस्थी में आग लगा लेते है। जातीय विषय की अज्ञानता के कारण ही इस उपन्यास के नायक–नायिका परमजीत और संजीवनी 'बेघर' हो जाते है।

संजीवनी के साथ परमजीत विवाहोपरान्त जब पहली बार शारीरिक संबंध बनाता है तो संजीवनी न तो चीखती चिल्लाती है और न हाय–तौबा मचाती है और न ही उसे रक्त स्त्राव होता है इस घटना के बाद परमजीत के मन में यह बात घर कर जाती है कि वह संजीवनी के जीवन में आने वाला पहला पुरूष नही है जिसका परिणाम यह होता है कि दोनों का 'तलाक' हो जाता है। परमजीत पुनः रमा से विवाह करता है, रमा परम्परा के अनुसार कुँवारी है। किंतु रमा एक फूहड़, कंजूस और स्वार्थी स्वभाव की स्त्री है। जबकि परमजीत ने एक खूबसूरत और कलात्मक पत्नी की कल्पना की थी। संजीवनी परमजीत के मन के मीत की तरह थी लेकिन परंपरागत मान्यता के कारण वह उसे संभाल नहीं पाया। इस उपन्यास में लेखिका ममता कालिया जी ने समाज की जर्जर और पुरानी पंरपराओं को तोड़ने का आवाहन किया है। हम जब तक इन पुरानी मान्यताओं के पीछे भागते रहेंगे तब तक परमजीत जैसे पुरूषों का घर बर्बाद होता रहेगा और वे घर से 'बेघर' हो जाने को मजबूर होते रहेंगे। यदि परमजीत पुरानी संकीर्ण परंपरा पर ध्यान न देता तो आज वह सुखी और खुशहाल जीवन जी पाता किंतु इस मान्यताओं के कारण उसे हृदय घात का सामना करना पडा। ममता जी ने यह उपन्यास शारीरिक संबंध को ध्यान में रखकर लिखा है और पुरूष की संस्कारबद्ध जड़ता, संदेह प्रवृत्ति और संकीर्ण मानसिकता को उभारा है।

चित्रा मुद्गल 'ऑवा'

चित्रा मुद्गल का ऑवा एक ऐसा उपन्यास है जो स्त्री विमर्श का महान आख्यान प्रस्तुत करता है। ऑवा एक नायिका प्रधान उपन्यास है जिसकी नायिका नमिता हैं। इस उपन्यास में लेखिका ने स्त्री पात्रों के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद आए स्त्री के बदलावों को बड़े ही विस्तृत और सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिका नमिता, पिता की मृत्यु के बाद पढ़ाई छोड़कर नौकरी करने लगती है लेकिन वहॉ पर अन्ना साहेब की अश्लील हरकतों के कारण तंग आकर तीन ही महीने में नौकरी छोड़ देती है। फिर वह बाबा ज्वेर्लस के यहॉ नौकरी करती है जहॉ उसे संजय कनोई से प्रेम हो जाता है। संजय कनोई पहले से ही विवाहित है लेकिन फिर भी वह नमिता को अपने प्रेमजाल में फॅसाता है और नमिता पर वह अपना अधिकार समझता है इसीलिए जब उसे नमिता के गर्भवती होने का पता चलता है तो वह उसे धमकाते हुए कहता है कि ''तुम मेरे बच्चे को हाथ नहीं लगाओगी। अगर कोई छेड़छाड़ की बच्चे संग तो तदूरकाण्ड हो जाएगा जान से जाओगी तुम नैना साहनी की तरह। एकदम सुशील शर्मा की आत्मा प्रवेश कर जाएगी मुझमें।''11 वह नमिता से विवाह नहीं कर सकता परंतु नमिता पर वह अपना अधिकार समझता है। नमिता के अलावा स्मिता भी उपन्यास की एक 'बोल्ड' पात्र है जो अपने पिता के उम्र के व्यक्ति से प्यार करती है वह शारीरिक सुख के लिए पुरूशों का शिकार करती है। अपने उपन्यास ऑवा में चित्रा जी ने भट्टी में लगातार पक रही स्त्री की कहानी कही है। ऑवा पर अपने विचार प्रकट करते हुए कुसुम वार्ष्णेय जी कहती है ''ऑवा नारी को हर तरह के अवमूल्यन से बचने को उत्प्रेारित करता है। रूढ़ियों और अवमूल्यन दोनों से जब नारी मुक्त होगी तो वहीं मुक्ति चेतना का सही अर्थ होगा।''12 प्रख्यात आलोकचक शिवकुमार मिश्र जी ने भी ''ऑवा'' को ''औरत के वजूद से जुड़े सवालों का दहकता सुलगता दस्तावेज और एक बड़े आकार का विचारोंत्तेजक उपन्यास कहा है।''13

स्त्री, साहित्य के केन्द्र में शायद आदिकाल से ही रही है। चाहे वो महाकाव्य हो या उपन्यास या कविता। रामायण की पूरी रचना ही सीता के ईदर्गिद घूमती है, वहीं माहभारत में द्रौपदी एवं कुन्ती ताना बाना बुनती दिखाई देती है। जयशंकर प्रसाद की कामायनी हो, मैथिलीशरण गुप्त की उर्मिला या प्रेमचंद्र की निर्मला या प्रभा खेतान की प्रिया इन सभी एंवम् अन्य बहुत सारी रंचनाओं में स्त्री पात्र एंवम् स्त्री चित्रण केद्रं बिदु में है। साहित्यिक प्रेमी ये बता सकते है कि स्त्री पात्र बिना ये सारे साहित्य अधूरे हैं। साहित्य समाज का दर्पण है लेकिन क्या ये वास्तव में दपर्ण है? क्या जैसे हम स्त्री को कहानियों में या साहित्यों में देखते हैं वैसे ही हम वास्तविकता में महसूस करते हैं जो एक साहित्य के पात्र के समान ही होती है। ।

सृष्टि की रचना के साथ ही नर और नारी एक दूसरे के विकल्प बन गए थे। एक के बिना दूसरा जैसे अधूरा होता है वैसे ही साहित्य और साहित्यकार में संबंध होता है। ऐसा नहीं है कि पुरूष या नर स्त्री या नारी के मनोभाव, संवेद, मनोवृत्ति, मनो. विज्ञान एवम् सामाजिक विज्ञान को नहीं समझता। एक पुत्री के दर्द को एक मॉ , स्त्री जितने अच्छे से समझ सकती है ठीक उतना ही पिता भी समझ सकता है। एक पुत्र अपनी मॉ के भाव को उतने ही अच्छे से समझ सकता है, जितना की एक पुत्री समझ सकती है। परतु सामाजिक कुरीतियों एवम् सांसारिक ताने–बाने को बुनने हेतु किए गए प्रयास के कारण आज स्त्री साहित्यकारों को ये कहना पड़ रहा है कि स्त्री के भाव को स्त्री ही समझ सकती है। पंरतु इस बात से नकारा नहीं जा सकता कि स्त्री साहित्यकार अपने स्त्री पात्रों को ज्यादा एवम् कलात्मक ढंग से व्यक्त करने में पुरूष साहित्यकारों से ज्यादा सफल है। जैसे फूलों में से पहचानना मुश्किल होता है कि इसमें स्त्रीलिंग और पुलिंग कौन सा है। ठीक कुछ वैसा ही होगा जब स्त्री केंद्रित कहानियों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने से पहले उनके रचनाकारों के नाम हटा दिया जाए। लेखक कोई भी हो सकता है–स्त्री या पुरूष। अतः लैंगिक पहचान की बात एकदम बेमानी हो जाती है। महिला केंद्रित हर संरचना 'महिला–लेखन' हो ऐसा कतई जरूरी नहीं है। महिला–लेखन एक नई नजर से अपने–आप को पहचानने की चेतना का नाम है।स्त्रियां अपनी शशक्त लेखनी के माध्यम से आज अपनी हर उस बात को कहने में सक्षम हो रही है जिसको कभी समाज में या पर पुरूष से कहना स्त्री चरित्र पर संदेह जताता था। आज वो बेहिचक अपनी कहानियों, उपन्यासो एवम् आत्मकथाओं के माध्यम से स्त्री की बात ,स्त्री का समाज एवम् पुरूष के स्त्री प्रति व्यवहार को बड़े निरंकुश ढंग से व्यक्त कर रही है जो उनकी अभिव्यक्ति एवम् स्वतंत्रता के प्रति बढ़ते कदमों को प्रदर्शित करता है।

REFERENCES

1 गह आनन्द कादम्बिनी, माला 5, पृ0 75 | 2 श्रृंखला की कड़ियॉ पृ0 72 | 3 श्रृंखला की कड़ियॉ ,अपनी बात से उध्दत 1995 | 4 हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना पृ0 43 | 5 छिन्नमस्ता पृ0 11 द्य 6 छिन्नमस्ता | 7 हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना पृ0 65 | 8 आदमी का निगाह में औरत पृ0 65 | 9 मित्रों मरजानी पृ0 75 | 10 आदमी का निगाह में औरत पृ0 129 | 11 ऑवा पृ0 526 | 12 तद्भव ;अप्रैल 2001द्ध पृ0 240 | 13 पहल ;जरवरी 2001द्ध पृ0 284 |